66 वर्ष सेवा के

सेवा सदन संवाद

67 वाँ स्थापना दिवस : 31 अगस्त, 2024

(स्थापित 1958)

नागरमल मोदी सेवा सदन

कम खर्च - समुचित इलाज - सही व्यवहार

सेवा सदन पथ, राँची - 834001 6204752640, 6204752651 sevasadan7@gmail.com

झलकियाँ

नागरमल मोदी सेवा सदन
कम खर्च- समुचित ईलाज- सही व्यवहार
दिवस
AMBULANCE

SALIENT FEATURES

HEA
CENTR
"मेरा वादा है:
मैं वोट जरूर करूंगा"
"दान" और "भिक्षा" में अंतर होता है.
'दान' योग्य व्यक्ति को दिया जाता है,
और 'भिक्षा' जरूरतमंद को।
मतदान भी दान है।
योग्य व्यक्ति को दीजिए
मतदान अवश्य कीजिए।

मोदी सेवा सदन

नागरमल मोदी सेवा सदन

"PREVENTION OF EYE PROBLEMS"

अध्यक्षीय उद्गार...

प्रिय बंधुओं,

स्थापना दिवस की सबों को बहुत बहुत बधाईयाँ और शुभ कामनाएं।

नागरमल मोदी सेवा सदन की स्थापना उन दिनों हुई थी जब शहर में या आसपास चिकित्सा की सुविधा पर्याप्त नहीं थी। समय के साथ साथ चिकित्सा सेवा की उपलब्धता में भारी वृद्धि हुई है। किन्तु, इसके साथ ही चिकित्सा के खर्च में उससे कई गुना ज्यादा वृद्धि हुई है।

आम आदमी न तो कॉर्पोरेट हॉस्पिटल का खर्च वहन कर सकता है और न ही राजकीय हॉस्पिटल की व्यवस्था में ईलाज करा सकता है। सेवा सदन इस तरह के रोगियों को आकर्षित कर रहा है।

सेवा सदन का उद्देश्य "कम खर्च, समुचित ईलाज और सही व्यवहार" है। सेवा सदन का हमेशा से प्रयास रहा है कि जिन रोगों का ईलाज काफी खर्चीला है उनकी कम खर्च में चिकित्सा सेवा विकसित की जाए। इसी क्रम में समाज के सहयोग से हृदय रोग चिकित्सा की उत्कृष्ट सुविधा विकसित की गई है। हम बहुत आभारी हैं कोल् इंडिया लिमिटेड के जिनसे हमें इस कार्य के लिए अभूतपूर्व आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया" की भावना से सेवा सदन की स्थापना की गई थी। सेवा सदन परिवार इस भाव को लगातार मूर्तरूप दे रहा है। समाज के पिछड़े वर्ग के लिए निः शुल्क चिकित्सा सेवा की व्यवस्था की गई है। समाज के पिछड़े वर्ग के लिए ही सदन में "प्रधान मंत्री जन आरोग्य योजना आयुष्मान भारत" का संचालन विषम परिस्थितियों में भी सफलता पूर्वक किया जा रहा है। देश के रक्षा राज्य मंत्री और हमारे लोकप्रिय सांसद माननीय संजय सेठ की प्रेरणा और सहयोग से बहुत ही कम शुल्क पर डायलिसिस सेवा विकसित की जा रही है।

मानानीय संजय सेठ जी के आह्वान पर शहर के दूर दराज आतंरिक इलाकों में चिकित्सा जाँच की सुविधा प्रदान करने के लिए "पैथोलॉजी ओन व्हील्स" की योजना बनाई जा रही है। निःसंतति के ईलाज के लिए कम खर्चीला A.R.T. सेंटर स्थापित किया जा रहा है। हमने संकल्प लिया था कि सदन में आये गंभीर से गंभीर रोगियों को प्राथमिक चिकित्सा अवश्य मिले। इस कार्य में हमें काफी सफलता मिली है।

हमने संकल्प लिया था कि हमारे सदन को NABH की मान्यता मिले। हमें NABH में एंट्री मिल रही है। NABH के मापदंडों के लागू होने से सदन की नर्सिग में उत्कृष्टता नजर आ रही है। सेवा सदन का प्रत्येक पदाधिकारी एवं प्रत्येक कर्मचारी संस्था के विज़न, मिशन और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कृत संकल्पित हैं। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सदन की सभी योजनाएं धरातल पर अवतरित होंगी।

सदन के 67वें स्थापना दिवस पर "सेवा सदन संवाद" पत्रिका का प्रकाशन किया गया है। इसके लिए पत्रिका के संपादक हमारे माननीय सदस्य श्री आलोक तुलस्यान जी तथा उनकी टीम के सभी सदस्यों को बहुत बहुत बधाई और धन्यवाद।

अरुण कुमार छावछरिया
अध्यक्ष

सचिव की कलम से...

नागरमल मोदी सेवा सदन एक पुण्य भूमि है। सदन के 67वें स्थापना दिवस पर मेरे दादा जी श्रद्धेय नागरमल जी मोदी एवं सभी संस्थापकों को सादर नमन एवं सभी सहयोगियों का अभिनन्दन। मुझे स्मरण करते हुए गर्व होता है कि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय अभियान **"मेरी माटी मेरा देश"** के तहत् 08.09.2023 को स्वतंत्रता सेनानी नागरमल जी मोदी के बड़ा लाल स्ट्रीट, राँची आवास से श्री उमेश गोपीनाथ जी एवं मेजर संजय मल्होत्रा जी के द्वारा विधिवत् तरीके से पवित्र माटी ली गई।

सदन में सात दशकों की यात्रा में अनेक आध्यात्मिक संतों, राजनेताओं, समाज के मनीषियों का भी पदार्पण होता रहा है। आप सबों के आशीर्वाद से सदन आज इस ऊँचाई पर पहुँचा है।

वर्तमान में सदन में 18 प्रमुख विभाग और 5 जाँच विभाग मुख्य रूप से सेवारत हैं। अनेक आधुनिक उपकरणों से विभागों को उन्नत किया गया है। कमरों में इंटीरियर के साथ सुविधा बढ़ाई गई है। डायटिशियन के परामर्श अनुसार हर प्रकार के भोजन सदन के डाइट किचन से रोगियों के लिए उपलब्ध है। सदन में दवा आपूर्ति केन्द्र द्वारा सीधे रोगियों को दवा दी जाती हैं।

सदन की दो मुख्य चुनौतियां यथा चिकित्सकों के लिए कार पार्किंग तथा बारिश में सदन के अंदर व आसपास जल जमाव का निदान जरूरी है। सदन में हृदय विभाग का शुभारंभ इस वर्ष का सर्वोत्तम सुनहरा समय रहा है। समय की जरूरतों और हर पल टेक्नोलॉजी में हो रहे नए आविष्कारों और Hospital with Hospitality के अनुरूप सदन भी बदलाव हेतु सदैव सक्रिय है।

आशीष (मीनु) मोदी
सचिव

संपादकीय...

आलोक तुलस्यान

''सेवा सदन संवाद'' का दूसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। सदन के वरिष्ठ प्रबुद्धजन, चिकित्सक तथा युवा सहयोगियों से इस संदर्भ में मुझे संवाद का सुअवसर मिला। सबों के प्रति हृदय से आभार। अनुभवों, कार्य-कलापों, योजनाओं को सुनने, समझने तथा समन्वय से हमारी प्रेरणा परिष्कृत होती है।

समर्थ तथा सेवा भावी समाज के सतत् सहयोग से सेवा सदन स्थापना काल से 66 वर्षों के सफर में उत्तरोत्तर प्रगति उन्मुख रहा है। इस वर्ष ''हृदय विभाग'' का शुभारम्भ निश्चय ही सदन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है। कागज पर हृदय की रेखा खींचना या चित्र बना देना और हृदय विभाग की संरचना स्थापित कर शुभारम्भ कर देना एक सा नहीं है। सेवा सदन संवाद का यह अंक समर्पित है सदन के हृदय विभाग को।

स्थापना दिवस संस्थान द्वारा स्थापित मूल्यों को स्मरण रखने, संस्थापकों सहित सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के साथ नये लक्ष्यों पर प्रतिबद्धता का विशेष दिन होता है। इस भाव को केन्द्र में रखकर सीमित-संक्षिप्त प्रस्तुति है - ''सेवा सदन संवाद''।

सदन के युवा सदस्य श्री वरूण जालान के अथक सहयोग की मैं सराहना करता हूँ। सह-सचिव श्री वेद प्रकाश बागला के मूल्यवान मार्गदर्शन के लिए मेरा विशेष आभार है। अपनी-अपनी व्यस्तताओं के बावजूद, सदन के अध्यक्ष द्वारा आत्मिक सुझाव एवं सचिव द्वारा सक्रिय सहयोग व प्रोत्साहन प्रशंसनीय हैं। प्रकाशन संबंधित कतिपय त्रुटियों हो सकती हैं; जिसके लिए मैं क्षमा प्राथी हूँ।

पूर्व अध्यक्षों के उद्‌गार...

कृष्ण कुमार पोद्दार

1990 तक सेवा सदन में सामान्य चिकित्सीय सेवाएँ उपलब्ध थीं और विशेष रूप में यह एक प्रसूति केन्द्र था। मुझे तीन बार लगातार (1991-2000) सेवा सदन के अध्यक्ष का दायित्व मिला। मैंने भरपूर प्रयास किया सेवा सदन को एक उन्नत सुपर स्पेशिलिटी हॉस्पीटल बनाने के लिए। मेरे कार्यकाल में सदन के अंदर फार्मेसी शुरू की गई। उन्नत पैथोलॉजी व्यवस्थित की गई। आरथोपेडिक एवं यूरोलॉजी विभाग स्थापित किए गए। लेपरोस्कोपिक सर्जरी के लिए विश्व स्तरीय उपकरण मंगाए गए, साथ ही सदन के दो डॉक्टरों को विशेष प्रशिक्षण के लिए बाहर भी भेजा। नेफरोलॉजी विभाग भी इसी दौरान स्थापित हुआ। संविधान के अंतर्गत सदन में मेडिकल बोर्ड का गठन मेरे कार्य काल में ही हुआ।

सेवा सदन को आत्मनिर्भर और आधुनिक बनाते हुए हम 250 बिस्तर वाले सुपर स्पेशलिटी हॉस्पीटल बन गए। मेरे पूरे कार्यकाल के दौरान मात्र दस रुपए ओपीडी शुल्क रहा ओर संभवतः 300-350 रोगी प्रतिदिन लाभ लेते थे। यथा याददाश्त शत्-प्रतिशत से अधिक आक्युपेंसी रहती थी।

राजकुमार केडिया

सत्र 2006-2009 में मैंने सेवा सदन के अध्यक्ष का दायित्व निभाया। यद्यपि सेवा सदन में मेरी सक्रियता लंबे समय से रही। स्व. चतुर्भुज जी खेमका एवं श्री जुगल किशोर जी मारू के अध्यक्षीय काल में मुझे सचिव के रूप में काम करने का सुअवसर मिला था। इसी कार्य-काल में ब्लड बैंक, CCU, C.T. Scan, Color Doppler, TMT एवं केडिया सुपर डिलक्स वार्ड का निर्माण हुआ। श्री अजय मारू (तत्कालीन सांसद, राज्यसभा) का मुझे विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। श्री अजय मारू के सांसद नीधि से सदन में दो लिफ्ट भी लगे थे।

आज जब सेवा सदन में हृदय रोग विभाग प्रारम्भ हो गया है तो निश्चित रूप से सेवा सदन एक विशिष्ट पहचान और नई ऊँचाइयाँ स्थापित करेगा। शुभकामनाओं सहित।

राजेन्द्र कु. सरावगी

मुझे इस अस्पातल से जुड़ने का सौभाग्य 1993 ई. में मिला और तब से मुझे जो भी दायित्व प्रबंधन द्वारा दिया गया उसे मैं सक्रिय रूप से निभाता चला आ रहा हूँ। मुझे 2018-21 के सत्र में अध्यक्ष के रूप में सेवा देने का मौका मिला। वर्ष 2019-20 में कोरोना की भयंकर महामारी के चलते सामान्य चिकित्सकीय कार्य बाधित हो गया था किन्तु मुझे यह बताने में गर्व है कि हमने सफलतापूर्वक लगभग 700 कोरोना मरीजों का ईलाज न्यूनतम खर्च पर किया जिसकी समाज के द्वारा काफी प्रशंसा की गई।

एक समय था जब नागरमल मोदी सेवा सदन के 230 बेड भी मरीजों के लिए कम पड़ते थे किन्तु आजकल सदन की ऑक्यूपेंसी लगभग 100 मरीजों की है। ऑक्यूपेंसी बढ़ाने की चुनौती आज सबसे बड़ी है।

झारखण्ड बनने के बाद इस क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं में कॉरपोरेट जगत एवं निजी क्षेत्र के कई अस्पताल विभिन्न सुपर स्पेशियलिटी की सुविधा के साथ स्थापित हुए जिनसे सेवा सदन को स्पर्द्धा मिली। चिकित्सा क्षेत्र में दौड़ में बने रहने के लिए आज हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

चुनौती यह भी है कि बीमार मरीजों को उत्कृष्ट सेवा प्रदान की जाए क्योंकि उनके पास असीमित विकल्प हैं। बढ़ते वेतन, बढ़ती बिजली की दरें, दवाइयों की बढ़ती कीमत, चिकित्सकों की अपेक्षाओं के बीच उत्कृष्ट चिकित्सा सेवा के लिए दरों को कम रखना एक चुनौती है। चुनौती यह भी है कि हम कैसे अपने निपुण मानव संसाधनों को अपने साथ जोड़े रखें।

चुनौती आज यह है कि प्रतिस्पर्द्धा को देखते हुए आधुनिकतम चिकित्सा पद्धति अपनानी है जिसके लिए महंगे उपकरणों की आवश्यकता है। प्रतिदिन नये प्रयोग एवं आविष्कार हो रहे हैं जिससे हमें भी अपने आप को सुसज्जित करने की आवश्यकता है।

संक्षेप में ''जो दे सके उनसे लो एवं जो अक्षम हैं, उनको रियायती दरों पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी जाए।'' के सिद्धांत पर हमें चलना होगा।

हृदय विभाग
सदन की महत्वाकांक्षी योजना

अजय मारू
(पूर्व अध्यक्ष)
मेडिकल बोर्ड चेयरमैन

नागरमल मोदी सेवा सदन जो झारखंड का सबसे प्रसिद्ध एवं प्रमुख चैरिटेबल अस्पताल है, उसने इस वर्ष यानी 2024 में अपने 66 वर्ष के इतिहास में एक नया अध्याय "हृदय विभाग" की स्थापना की है, जिसके आरंभ हो जाने से इस अस्पताल के द्वारा इस क्षेत्र की जनता को न्यूनतम दर में इससे संबंधित सभी प्रकार की बीमारी का इलाज होना संभव हो गया।

नागरमल मोदी सेवा सदन द्वारा पिछले कई वर्षों से हृदय रोग का एक अलग विभाग खोलने का प्रयास किया जा रहा था और समय-समय पर इस योजना पर प्रयास भी किया गया परंतु बड़ी योजना होने के कारण व धन की आवश्यकता भी बड़ी होने के कारण इसे चरितार्थ करने में कठिनाइयां हो रही थी। लेकिन एक कहावत है कि जब समाज के लिए कोई बड़ा या नेक कार्य करने की सोच आती हैं तो ईश्वर किसी न किसी रूप में, कार्य पूरा करने के लिए किसी न किसी रूप में सहयोग प्रदान कर देते हैं।

वर्ष 2022 में संस्था के माननीय सदस्य श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया जी, पूर्व अध्यक्ष श्री राजकुमार जी केडिया, उस वक्त हमारे समाज के राज्यसभा सांसद श्री महेश पोद्दार जी और वर्तमान प्रबंध समिति के सदस्यों ने कोल इंडिया के तत्कालीन अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल जी से भेंट की और इस महत्वाकांक्षी योजना के लिए कोल इंडिया के CSR फंड से सहयोग देने का अनुरोध किया। उन्होंने अपनी स्वीकृति देते हुए प्रोजेक्ट रिपोर्ट देने को कहा। सदन के अध्यक्ष श्री अरूण छावछरिया जी ने इस अति महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट के लिए सदन के वरीय उपाध्यक्ष श्री पुनीत पोद्दार को इस योजना की जिम्मेदारी दी। श्री पुनीत पोद्दार ने सदन के सदस्य श्री पवन कनोई को अपने साथ जोड़ा तथा जल्द से जल्द प्रोजेक्ट रिर्पोट बनाया तथा डॉक्टर सुनील रूंगटा जी के सहयोग से Philips India की सबसे नई टेक्नोलॉजी वाली Cathlab मशीन का चयन किया गया। प्रोजेक्ट करीब 10 करोड़ रूपया का बना तथा कोल इंडिया ने अपने CSR फंड से 5 करोड़ 15 लाख रूपए की स्वीकृति दी तथा बाकी राशि सदन के माननीय सदस्यों एवं समाज के दानदाताओं के सहयोग से उपलब्ध कर इस प्रोजेक्ट को आरम्भ किया गया।

इस हृदय रोग विभाग को सुचारू रूप से चलाना सदन के लिए एक चुनौती थी। इस पर भी श्री पुनीत पोद्दार ने कई बैठकें की तथा आसपास के राज्यों के बड़े अस्पतालों के Cathlab को देखने और इसके विशेषज्ञों से राय लेने के बाद हृदयालयम हेल्थकेयर के डॉक्टर प्रत्यय गुहा सरकार जी से एक इकरारनामा कर इस विभाग को उन्हें सदन की प्रबंधन समिति से पारित करके सौंपा।

सर्वप्रथम हृदयरोग विभाग की OPD और उसके बाद Cathlab आरंभ किया गया। आज सदन का यह विभाग शहर का एक आधुनिक हृदय रोग विभाग के रूप में धीरे-धीरे अपनी ख्याति प्राप्त कर रहा है। और अगले कुछ माह में यहां पर हृदय रोग से संबंधित सर्जरी भी चालू हो जाएगी। अभी इस विभाग में प्रमुखता से Cath Lab, CCU, CTVS, Coronary Angiography, Pacemaker, ICD आदि हृदय रोग से संबंधित इलाज की सुविधा दी जा रही है, साथ-साथ सदन के चौथे तल्ले में जहां यह सुविधा चालू है, वहां पर दवा दुकान और इस रोग से संबंधित सभी प्रकार की "लैब" भी चालू कर दिया गया है।

इस कार्य में उपरोक्त सभी पदाधिकारी का तो सहयोग रहा ही, साथ-साथ प्रमुख रूप से पुनीत पोद्दार और पवन कनोई का महत्वपूर्ण योगदान रहा। साथ-साथ हमारे माननीय सदस्यों ने तथा समाज के प्रबुद्धजनों ने भी इस महत्वाकांक्षी योजना में दिल खोलकर अनुदान दिया। मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में झारखंडवासी सेवा सदन की नई पहल का पूरा लाभ लेंगे।

संकल्प से सिद्धि

पुनीत पोद्दार
(वरीय उपाध्यक्ष)
प्रोजेक्ट चेयरमैन,
हृदय विभाग

नागरमल मोदी सेवा सदन मानव सेवा का एक ऐसा मन्दिर है जिसकी स्थापना 66 वर्ष पहले की गई थी। इस संस्था में हमारे समाज के कई अग्रणी समाजसेवियों ने अपने खून पसीने से सींचा है। पिछले करीब 20 वर्षो से मैं भी सक्रिय रूप से जुड़ा हूँ तथा यह ईश्वर की बड़ी कृपा है कि मेरे दादाजी एवं पिताजी की तरह मुझे भी इस संस्था के माध्यम से मानव सेवा का मौका मिला।

कुछ वर्षो पहले मेडिकल बोर्ड चेयरमैन श्री अजय मारू जी और हमारी टीम के मन में एक कैथलैब स्थापित करने का विचार आया। समय समय पर कुछ Cardiologist Doctors से बातें होती रहीं पर कुछ निर्णय नहीं हो पाया। मैं श्री राम कृष्ण मिशन तथा अन्य संस्थाओं से भी जुड़ा हूँ तथा वहाँ CSR के मद से काफी मदद मिलती रहती है। हमने सेवा सदन में भी CSR के लिए प्रयास करने का निर्णय लिया तथा C.I.L. में आवेदन जमा किया। CSR आवेदन के लिए प्रोजेक्ट रिर्पोट बनाना तथा पूरा कागजी कार्य करना काफी जटिल एवं नया काम था। अतः हमने अपने युवा एवम मेधावी सदस्य

श्री पवन कनोई को यह जिम्मेवारी दी जिन्होंने काफी लगन एवम उत्साह से इसे पूरा किया तथा अपनी टीम बनाकर असंभव से दिखने वाले काम को संभव कर दिखाया तथा हमें कोल इंडिया से कैथलैब के लिए 5.15 crore का अनुदान मिल गया। इस पूरी प्रक्रिया में हमे कई समाजसेवी श्री अजय मारू जी, श्री महेश पोद्दार जी, श्री गोवर्धन जी गाड़ोदिया, श्री राज कुमार जी केडिया एवं अन्य का सहयोग मिला।

हमें इस जिम्मेदारी का भी एहसास हुआ कि हमें एक बहुत अच्छा कैथ लैब सेंटर बनाकर देना है। सेवा सदन के प्रबंधन ने इस बड़ी जिम्मेदारी को निर्वाह करने के लिए मुझे इसका प्रोजेक्ट चेयरमैन बनाया तथा श्री अजय मारू जी के नेतृत्व में हम लोगों ने कई बड़े Cardiac Centres - जैसे Mission Hospital, Durgapur, ILS Hospital, Kolkata तथा अन्य बड़े Cardiologist तथा CathLab Specialists एवम Corporate Hospitals से मंत्रणा की तथा यह पाया कि सिर्फ Cathlab खोलने से काम नही चलेगा बल्कि हमें सम्पूर्ण Cardiac Centre की जरूरत है तथा यह भी पाया कि यह काफ़ी Hi -Tech तथा Super specialty dept. है जिसको प्रबंधन करना तथा इसके संचालन लागत को वहन करना शायद भोगे नहीं पड़ेगा। हमने निर्णय लिया कि हमें संयुक्त उपक्रम करना चाहिए ताकि हम अपने उद्देश्य कम खर्च, समुचित इलाज, सही व्यवहार का अनुपालन कर सकें। हमने इसके लिए कई चिकित्सक तथा अस्पताल से बात की जैसे डॉ. ललित कपूर, कोलकाता; डॉ देवी शेट्टी (नारायणा हॉस्पिटल), बंगलौर; डॉ समंजॉय मुखर्जी, दिल्ली एवं अन्यों से भी। काफी अनुसंधान के बाद रांची के Heart Centre के सुप्रसिद्ध डा. प्रत्यय गुहा सरकार तथा उनके सहयोगी डा. अनुपम, डा. विनय, डा. आशुतोष जी के साथ जुड़ने का निर्णय लिया। इतने दिनों के अनुसंधान तथा सोच विचार के बाद हमने यह निर्णय लिया कि ना सिर्फ एक full fledged Cardiac Centre बल्कि हम एक State of the Art CTVS Centre भी बनाएंगे जहां Heart Surgery भी हो सकेगी। यह हमारे लिए एक दिवास्वप्न प्रयास था। कुल बजट करीब दस करोड़ पहुंच रहा था। श्री अजय मारू जी के नेतृत्व में हमने अनुदान हेतु मुहिम शुरू की तथा ईश्वर की कृपा हुई। समाज के प्रसिद्ध समाजसेवी व्यापारी वर्ग ने इस नेक काम के लिए अपनी तिजोरी खोल दी। बड़े दान दाताओं में श्री प्रदीप नरसरिया जी, श्री गोपाल - गौतम मोदी जी एवम श्री रोमी मोदी जी के परिवार से बहुत सहयोग मिला तथा हमारे वयोवृद्ध समाजसेवी श्री भागचंद्र जी पोद्दार के सहयोग से भी काफी अच्छी रकम दान में मिली। हमारे JV Partner HHPL ने भी अपने तरफ से बड़ी रकम इस Cardiac Centre में निवेश किया। HHPL द्वारा CTVS विभाग में हार्ट सर्जरी के लिए प्रसिद्ध सर्जन श्री प्रसन्नता दास (कलकत्ता) की सेवा भी उपलबध कराई गयी।

CSR Fund लाने से लेकर पूरे Cardiac Centre के निर्माण तथा स्थापना में Project Coordinator श्री पवन कनोई जी की भूमिका अतुलनीय रही। इनके बिना यह योजना हकीकत मे हो पाना शायद संभव नहीं था। हर कदम पर मेडिकल बोर्ड चेयरमैन श्री अजय मारू जी, अध्यक्ष श्री अरूण छावछरिया जी, मानद सचिव आशीष मोदी एवं डॉ० सुनील रुंगटा जी एवं अन्य सभी सदस्यों का काफी सहयोग मिला जिसकी जितनी तारीफ की जाए वह कम है। आज हमारा सेवा सदन पूरे समाज के लिए एक विश्वस्तरीय Cardiac Centre with CTVS के साथ तैयार है जहां लोगों को उन्नत इलाज काफी समुचित दर पर मुहैया कराई जा रही है। उम्मीद है सभी के आशीर्वाद एवम स्नेह से यह हृदय विभाग अपने लक्ष्य में काफी सफल होगा तथा भविष्य में हम इस तरह के और आधुनिक विशिष्ट विभाग शुरू कर सकेंगे। मैं अपने आप को धन्य मानता हूँ कि मुझे इस प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी मिली तथा हम सब मिलकर संकल्प की सिद्धि कर पाए।

मेरे मनोभाव

प्रदीप नारसरिया
सदस्य

हृदय रोग सिर्फ एक चिकित्सीय स्थिति नहीं है; यह एक गहन चुनौती है जो दुनिया भर में अनगिनत जिंदगियों को प्रभावित करती है। यह लेख मेरी प्रेरणा की व्यक्तिगत यात्रा और हृदय रोगियों की सहायता के लिए मेरे द्वारा उठाए गए सार्थक कदमों पर प्रकाश डालता है।

जब दूसरों की मदद करने की बात आती है तो मेरे माता-पिता मेरे मार्गदर्शक रहे हैं, उन्होंने मुझमें छोटी उम्र से ही सहानुभूति और जिम्मेदारी की गहरी भावना पैदा की है। मैं आपको एक घटना के बारे में बताने जा रहा हूँ। मैं अपने माता-पिता के साथ रामेश्वरम की यात्रा कर रहा था। हम जिस धर्मशाला में रुके थे वहां कोई पंखा नहीं था। मेरी माँ ने मेरे पिता से हर कमरे के लिए पंखे उपलब्ध कराने का आग्रह किया क्योंकि किसी भी कमरे में एक भी पंखा नहीं था। मेरे पिता के पास जितना पैसा था, उन्होंने वह दानस्वरूप उस धर्मशाला में दे दिया। तब पैसे भेजने के कई सुविधाजनक तरीके भी नहीं थे। हमारे पास घर लौटने के लिए भी पैसे नहीं बचे थे। वापस आने के लिए हमने मद्रास की अमृतांजन बाम कंपनी से पैसा उधार लिया। उन दिनों अमृतांजन कंपनी का राँची में व्यवसाय पिताजी करते थे। और भी ऐसे कई क़िस्सों की वजह से छोटी उम्र से ही मेरी पिता की शैली मुझमें आने लगी।

2021 में ज्ञानू भैया (ज्ञानू जालान), जो मेरे लिए पितातुल्य थे, उन्होंने मुझे सेवा सदन में हृदय उपचार में समर्थन के लिए प्रेरित किया। मेरी पत्नी भी मुझे हमेशा समाज के बेहतर के लिए यथासंभव सहायता करने के लिए प्रेरित करती रही हैं।

इसके अतिरिक्त, यह विचार कि हृदय संबंधी स्थितियाँ परिवार के वित्त को प्रभावित करती हैं, मुझे बहुत चिंतित करता है। मेरी परिचित एक महिला को अपने पिता की चिकित्सा देखभाल का भुगतान करने के लिए बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मैंने अन्य ऐसी कई परिस्थितियों को देखा है जहां हृदय रोग के कारण कई घरों में आर्थिक परेशानियाँ आती हैं ।

इसके अलावा, मुझे एहसास हुआ कि हर योगदान, चाहे कितना भी छोटा या बड़ा हो, स्वास्थ्य देखभाल के परिणामों को बेहतर बनाने और हृदय रोगियों के लिए जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के सामूहिक प्रयास में योगदान देता है। सहायता का कार्य मेरे लिए, हृदय रोग से प्रभावित लोगों के प्रति सहानुभूति और एकजुटता व्यक्त करने, उनकी कठिन यात्राओं के दौरान आशा और समर्थन प्रदान करने का एक स्वभाव बन गया है।

The Heart-Mind Connection: Understanding the Relationship Between Heart Disease and Mental Health

Dr. Prattay Guha Sarkar
MD (Internal Medicine), DM (Cardiology), FSCAI

Introduction: In the intricate web of our health, the connection between our physical and mental well-being often intertwines in unexpected ways. One such connection lies between heart disease and mental health. While heart disease primarily affects the cardiovascular system, its implications on mental health cannot be overlooked. In this blog, we delve into the relationship between heart disease and mental illness, exploring how one can impact the other and the importance of addressing both aspects of health for overall well-being.

Understanding Heart Disease: Heart disease encompasses a range of conditions that affect the heart, including coronary artery disease, heart rhythm disorders, and heart failure, among others. These conditions often develop over time due to various factors such as unhealthy lifestyle choices, genetics, and underlying medical conditions like diabetes and hypertension. Heart disease can manifest through symptoms like chest pain, shortness of breath, and fatigue, significantly impacting an individual's physical health and quality of life.

The Impact on Mental Health: While heart disease primarily affects the cardiovascular system, its repercussions extend beyond the physical realm. Research has shown a clear link between heart disease and mental health issues such as depression and anxiety. The stress of managing a chronic condition, coping with symptoms, and adjusting to lifestyle changes can take a toll on one's mental well-being. Feelings of sadness, worry, and frustration are common among individuals grappling with heart disease, highlighting the intricate interplay between the heart and mind.

The Role of Risk Factors: Several risk factors associated with heart disease also increase the likelihood of developing mental health disorders. Obesity, high blood pressure, diabetes, and smoking are not only detrimental to heart health but also predispose individuals to depression and anxiety. Furthermore, certain medications used to manage heart disease may have side effects that affect mood and cognition, further complicating the relationship between physical and mental health.

Addressing the Heart-Mind Connection: Recognizing the connection between heart disease and mental health is crucial for comprehensive healthcare. Integrating mental health screening and support into cardiac care can help identify and address the psychological impact of heart disease early on. Lifestyle interventions, such as regular exercise, healthy eating habits, and stress management techniques, play a vital role in both preventing and managing heart disease and supporting mental well-being.

Seeking Support: For individuals living with heart disease, seeking support from healthcare professionals, support groups, and loved ones is essential. Engaging in open communication about both physical and emotional concerns can help alleviate feelings of isolation and empower individuals to navigate the challenges posed by heart disease more effectively. Additionally, therapy and counseling can provide valuable tools for coping with the emotional burden of chronic illness and promoting resilience.

Conclusion: The intricate relationship between heart disease and mental health underscores the importance of adopting a holistic approach to healthcare. By recognizing and addressing the psychological impact of heart disease, we can better support individuals in their journey toward improved well-being. Through integrated care, proactive management of risk factors, and access to support services, we can nurture not only the health of the heart but also the resilience of the mind. Ultimately, by fostering a deeper understanding of the heart-mind connection, we can pave the way for healthier, happier lives.

A LEGACY OF CARE ; CELEBRATING YEARS OF HEALING AND HOPE

Dr. Anju Kumar
MD; DGO
Obstertics and Gynaecology

As we mark the foundation day of our esteemed hospital, I am filled with a sense of pride and nostalgia. Having been a part of this institution for more than two decades, I witnessed the remarkable transformation, the advancements in medical science and the unwavering commitment and excellence in this hospital.

From its humble beginning from the maternity ward to the current STATE OF ART facilities in the Emergency , Heart centre, Renal department laparoscopic modular OT , our hospital has come a long way. The Founders vision of providing quality Healthcare to all has been the guiding force behind our growth and success.

As I look back on my 25years journey ,I am reminded of the countless moments that have made my time here so rewarding. From the smiles of recovering patients to the gratitude of their families, everyday has been a testament to the power of compassion and care.

Recently I got to treat a patient referred from a private hospital with severe pain abdomen n blocked fallopian tubes .With my gynaecological team treated her with latest advances n equipments with laproscopy in the field of fertility and operated upon her big ovarian cyst and opened her blocked tubes .The patient went back smiling home with the assurance that she would be able to conceive naturally. We are expecting to do more advances in the field of fertility in the coming future in our hospital.

We will continue to push the boundaries of medical excellence , expand our services and remain committed to our core values of empathy , integrity and teamwork.

Heres to many more years of healing, growth and service.

Arthroscopy and Arthroplasty : New Horizons in Orthopedics at NMSS

Arthroscopy is a surgical procedure that involves the use of a pencil size viewing instrument (the Arthroscope) to examine the insides of a joint and treat diseases / injuries relates to the joint. Arthroplasty (Joint replacement) is an orthopedic procedure that involves surgically removing damaged parts of a joint and replacing them with artificial implants. It is a matter of joy and pride that these surgeries are being routinely done at Nagarmal Modi Seva Sadan, Ranchi.

I have received extensive training in these subspecialities from some of the most reputed hospitals in India and have been successfully performing these surgeries. With the reintroduction of Ayushman Bharat Scheme and a robust TPA Policy, the number of patients undergoing these major surgeries at Nagarmal Modi Seva Sadan has increased manifold. With the starting of Modular Orthopedic O.T. in the near future, we hope to establish Nagarmal Modi Seva Sadan as a center for affordable, quality, advanced orthopedic care.

Dr. Jay Palak,
MBBS, M.S. (Ortho), FIJR, FASM, FISS, DIP. FM

Beyond the Pill ..... Extended Healthcare
Organized Home care

Dr. Sunil Rungta
Medical Superintendent

Home–care programs are for elderly patients with chronic irreversible and disabling disorders who need health services like Physiotherapy, Speech Therapy, IV Medication or Fluids (Drip), Nebuliser Treatment, Diagnostic Tests (Pathology, X-ray, ECG), Oxygen Support, etc. which are manageable at their residence

Patients can be considered ready for home care when:

1) Diagnosis and a plan for treatment have been established:
2) Inpatient hospital facilities are no longer required for proper care;
3) The nursing service has found that the physical environment of the home is such that the patient receives adequate care;
4) The patient is too ill to visit an outpatient clinic but does not need hospital care;
5) The family environment would have a therapeutic effect, and family members or others can be taught to provide the necessary care;
6) The family and the patient prefer that care be provided at home. Home care conserves expensive acute-care beds, and most patients on home care do well or better than expected.

Home Care Services may include transportation, food, durable Medical Equipment (like wheel chair, stretcher, walker, suction pump, Oxygen concentrator), Pharmacy, diagnostic ((labs and radiology), social work and care coordination. Hospital -at- Home allows patients to remain in the comfort of their own home while still receiving the same hospital-level care post-discharge after meeting certain inclusion/exclusion criteria to be eligible. Home care programs has not only proven to be a clinically successful model for hospitals, but it has also increased patient satisfaction and reduced readmissions and ED visit.

Standard Operating Procedure for Home-Care:

Step one – A patient in need of hospital care is identified either in the emergency department or in-patient services who will be qualified by a Hospital-at-Home physician. Clearly defined criteria determine whether a patient is eligible and certain conditions that are considered to be treatable at home are an important determinant.

Step two – If the patient is eligible the physician describes what the next steps would be. He is then asked for consent to be treated by the hospital-at-home programme.

Step three – The patient is assigned a physician. After the physician creates a Plan of Care, a care coordinator meets the patient to discuss the next steps, arrange transportation, as well as arrange for any needed equipment to be sent to the home. Equipment can arrive before, with, or after the patient, Equipment may come with someone to set things up and explain how they work.

Step four – At home, the patient receives care according to their personalized care plan. Extended care continues after release from the hospital. Other orders may also be carried out by other clinical team members such as physical therapists, occupational therapists, nurse or EMTs doing things such as IV medication or fluids, nebulizer treatments, ECG and other tests or treatments.

Step five – The care team must be available 24/7 for any emergency that may arise. Many hospital-at-home setups come with an emergency kit, should an emergency arise.

Step six – Whether at home or via telephone, the physician visits the patient daily, (if required) monitoring the situation. The team continues to implement care and make updates according to the physician's notes, the plan of care, and the progress.

Step seven – For any tests or treatments that can't be performed at home, the patient is briefly transported back to the hospital or necessary medical facilities for short visits as needed.

Step eight – Once the patient has reached an improved objective or has achieved stabilization he is released from the hospital at home program and returned to the care of his primary care physician. This is most often when he can return to his daily activities without taking a step back in his health journey.

Step nine – The patient continues to check in as needed with their primary care physician, has virtual visits, or is put under the monitored at home program depending on his healthcare needs port-discharge from the HAH program.

After Hospital-At-Home – It is vital to be vigilant to ensure that hospital staff is ready to respond to acute need at home program.

Outcome: Hospital-at-Home patients overall have lower rates of mortality; less medication use There is an overall higher satisfaction of patients and their families. Significant cost savings compared to traditional hospitalization

Digitalisation at NMSS

Kaushik Chandra
I.T. Consultant

To run a Multi-Speciality Hospital in modern times requires a Hospital Information Management System (HIMS) for providing quality healthcare services at a reasonable cost. The HIMS integrates OPD, IPD, ICU, Patient Management, Nursing services, inventory control, Pharmacy Management, Laboratory and Clinical testing, Accounting services etc. under one system. The HIMS needs to be implemented in phases and the first phase has already been rolled out and working efficiently for the last 18 months. In the subsequent phases, bedside ticketing and patient data management will be rolled out.

In today's world of social networking, NMSS's presence in the social media is an important and necessary requirement to propagate NMSS's offering in terms of various healthcare services for people from all strata of life. To meet this objective a website is being developed and will be maintained on a regular basis where people can find details of all healthcare services offered by NMSS and in future even book appointments with consultants and pay for it online.

The digitalization of health services will provide efficient and affordable healthcare facilities for the masses, fulfilling the visions of NMSS founding fathers. However this also increases NMSS responsibility in protecting critical patient related data in today's digitized world. Awareness of this critical aspect of information security amongst NMSS staff and consultants alike needs to be enhanced many folds in a sustained and continuous manner.

सेवा सदन तब और अब

वेद प्रकाश बागला
सह-सचिव

सेवा सदन के साथ कई वर्षों के सतत् जुड़ाव से प्राप्त अनुभवों को अंकित कर रहा हूँ। सेवा सदन का संचालन कुछ जिम्मेवार कर्मचारियों, सेवा भावी चिकित्सकों एवं समर्पित सदस्यों के फलस्वरूप होता आ रहा है। 35-40 वर्ष पहले ऐसे व्यक्तियों की संख्या अधिक थी, शहर में अस्पताल भी कम थे, अस्पताल भरा रहता था, कमरे के लिए पैरवी होती थी। संसाधन कम थे, सुविधा कम थी, प्रतिबद्धता अधिक थी, उपचार से मरीज संतुष्ट थे। मरीजों के मन में चिकित्सकों और प्रबंधन के प्रति बहुत आदर था, बहुत विश्वास था, वे यह जानते थे कि ये सेवा भाव से कार्य कर रहे हैं। सामान्य एम बी बी एस डाक्टर भी गंभीर मरीजों का इलाज कर लेते थे। सर्जन भी ओ पी डी में मेडिसिन के मरीजों को देख लेते थे। उस समय भी प्रबंधन के पास सुविधाओं को बढ़ाने की बड़ी चुनौती थी। प्रबंधन की प्रतिबद्धता एवम समाज के सहयोग से ही पैथोलॉजी लैब, एक्स रे विभाग, शल्यन कक्ष, केबिन, एंबुलेंस आदि प्राप्त हुए और कार्य बढ़ता गया। अपने सेवा सदन की प्रतिष्ठा ऐसी थी कि चिकित्सक यहां कार्य कर मरीजों के बीच प्रसिद्ध हो जाते थे, फलतः कई निजी नर्सिंग होम खुले और शहर में चिकित्सा व्यवस्था बढ़ने का श्रेय अपने सेवा सदन को मिला।

वर्तमान में भी कुछ समर्पित चिकित्सकों, कर्मचारियों और सदस्यों के फलस्वरूप एवम समाज के सहयोग से ही मरीजों का उपचार हो रहा है, किंतु आजकल अस्पताल संचालन में बहुत से नियम बढ़ गए हैं। एम. डी. (रेडियोलोजी, पैथोलॉजी) के बिना जांच मान्य नहीं है। एम. डी. कंसलटेंट के बिना टी. पी. ए. में उपचार मान्य नहीं है। एम डी चिकित्सकों की बहुत कमी है, रोग के प्रकार बढ़ गए, जांच बढ़ गए हैं, कायदा कानून बढ़ गया हैं, पॉल्यूशन बोर्ड, क्लिनिकल एस्टेब्लिशमेंट के नियम, फायर एन ओ सी, लेबर लॉ आदि के अनुसार चलना आवश्यक है, खर्चे बढ़ गए हैं, उपचार खर्चीला हो गया है। शहर में अस्पताल बढ़ गए हैं, मरीजों और विशेषज्ञ चिकित्सकों के पास कई विकल्प हो गए हैं। इन सब के साथ मरीजों की अपेक्षा बढ़ रही है और उपचार में संलिप्त व्यक्तियों की प्रतिबद्धता में कमी देखी जा रही है।

भविष्य की चुनौतियों का सामना करने हेतु कई पहल किए गए एवम किए जा रहे हैं। कंप्यूटर एवम ऑन लाइन प्लेटफार्म जैसे वाट्स एप्प आदि का परिचारिकाओं द्वारा उपयोग, मॉडूलर शल्यन कक्ष का निर्माण, सभी विभागों में उन्नत उपकरण का उपयोग, मरीज प्रथम के भाव को दृढ़ करने हेतु परिचारिकाओ का, नर्सिंग इन-चार्जों का, काउंटर स्टाफ का कौशल एवं व्यवहार उन्नत करने हेतु निरंतर प्रशिक्षण एवम इनका मूल्यांकन, इमरजेंसी में आए सभी गंभीर मरीजों का ईलाज, प्रत्येक मरीज से मंतव्य, विशेषज्ञ चिकित्सकों की प्रतिबद्धता बढ़ाने हेतु वेतन पर रखना, सेवा उन्नत करने हेतु एन ए बी एच में निबंधन, मरीजों एवम अभिभावकों के समुचित खाने की व्यवस्था, टी पी ए, आयुष्मान सेवा आदि किए जा रहे हैं ।

शहर में इतने अस्पतालों के बाद भी नागरमल मोदी सेवा सदन अस्पताल रांची एवम आसपास के मरीजों के बीच अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है।

दूरगामी सोच का प्रतिफल है सेवा सदन

पवन शर्मा
सह-सचिव

देश की आजादी के 11 साल बाद, 31 अगस्त 1958 को नागरमल मोदी सेवा सदन की स्थापना दूरगामी सोच के साथ रखी गई। हमारे समाज के अनेकों चिंतक बुद्धिजीवी पूर्वजों ने एकजुट होकर इसकी स्थापना व संचालन किया। इतिहास गवाह है, नागरमल सेवा सदन विगत् सात दशकों से चिकित्सा के क्षेत्र में अपने उद्देश्यों की पूर्ति व जनहित सेवा कार्य में सफलता हासिल किया है। जहाँ कोरोना जैसे महामारी से पूरा विश्व पीड़ित था, रांची में भी हाहाकार मचा हुआ था, ऐसी विषम घड़ी में नागरमल मोदी सेवा सदन ने समाज व जनहित के लिए आगे आकर अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। सदन के पदाधिकारी, सदस्यगण, डॉक्टर टीम, जाँच केन्द्र, नर्सिंग, दवाकेन्द्र, एम्बुलेंस सेवा, सुरक्षा प्रहरी, सफाई कर्मचारी सभी के अभुतपूर्व सेवा योगदान से सेवा सदन का चौतरफा गुणगान हुआ।

सेवा सदन अत्याधुनिक चिकित्सा विज्ञान में भी पीछे नहीं है। सेवा सदन की स्वयंसेवी प्रबंधन क्षमता सराहनीय है। आज भी संस्थान की पूर्वजों द्वारा स्थापित संवैधानिक परंपरा पर गर्व होता है।

सेवा सदन कम खर्च में समुचित इलाज मुहैया कर प्रदेश के सुदूर इलाकों के हृदय में सेवा के सर्वोच्च आदर्श के साथ स्थापित है।

बदलते परिवेश में सेवा सदन में काफी संसाधनों, यूनिट, सुविधा एवं अन्य व्यवस्था को उच्च कोटि में रखने के लिए हमें कृत संकल्पित रहना होगा। जरूरत है, समाज को आगे आकर अपना योगदान तन-मन-धन से अर्पण करने की। यह संस्थान हमें को पूर्वजों द्वारा दिया गया अनमोल उपहार है।

अरूण खेमका
कोषाध्यक्ष

मैं स्वयं सेवा सदन के कार्यकलापों में सीधे तौर पर कोरोना जैसी विकट संक्रमणीय महामारी के समय जुड़ा। पारिवारिक बंदिशों के बाद भी सदन आकर मेडिकल उपकरणों को सुचारू रूप से संचालन, आवश्यकता पड़ने पर उचित सुधारात्मक कार्य को प्राथमिकता दी। यह क्षेत्र मेरे लिए बिल्कुल नया था, परन्तु हाँ - यह संवेदना और संकल्प अवश्य दृढ़ था कि स्वास्थ्य सेवा में कार्य आने वाले उपकरण सदैव दुरुस्त एवं सही रहें ताकि मरीजों के ईलाज में किसी भी किस्म की गलती की गुंजाइश ना रहे।

कोषाध्यक्ष के रूप में मुझे प्रस्तावित किया गया जिसे मैंने स्वीकार किया। कोषाध्यक्ष का कार्य भी बहुत पेचीदा नहीं था। अतः प्रतिदिन के कार्य को पूर्ण करने के साथ-साथ आज भी मैं सदन में बराबर उपकरणों को चुस्त एवं दुरुस्त रखने हेतु प्रतिदिन प्रयास करता हूँ।

सुर्खियाँ

सेवा सदन में निःशुल्क परामर्श शिविर

रांची : नागरमल मोदी सेवा सदन में रविवार को दिन के सभी रोग एवं सं
रोग परामर्श शिविर आयोजित किया गया। इसकी शुरुआत डॉ अंजू कुमार,
ऋचा अग्रवाल, डॉ क्षमा टिबड़ेवाल, सचिव आशीष मोदी, आलोक तुलस
रेखा जैन, पवन शर्मा, कमल केडिया एवं वरुण जालान के द्वारा दीप प्रज्ज
कर किया गया। शिविर में आये मरीजों को निःशुल्क परामर्श दिया गया। मरीजों
पैथोलॉजी जांच में 20 फीसदी की छूट दी गई। कुल 36 मरीजों को निःशु
परामर्श दिया गया। 8 मरीजों का अल्ट्रासाउंड एवं 20 मरीजों का पैथोलॉजी

सेवा सदन में निःशुल्क मेगा कैंप 456 मरीजों को मिला परामर्श

नागरमल मोदी सेवा सदन में मैनेजमेंट सोफ्टवेयर व पोर्टेबल वेंटिलेटर का पूर्व राज्यसभा सांसद ने किया उद्घाटन

भविष्य में रांची के नागरिकों को कम शुल्क में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं होंगी उपलब्ध

प्राण प्रतिष्ठा के दिन नागरमल मोदी सेवा सदन में छह शिशुओं का जन्म

'बच्चों के लिए स्तनपान जरूरी'

नागरमल मोदी सेवा सदन में मनाया गया डॉक्टर्स डे

आंखों की देखभाल को लेकर नागरमल मोदी सेवा सदन में हुई कार्यशाला

कम खर्च, समुचित इलाज, सही व्यवहार है इसकी पहचान

उम्मीद है सेवा सदन का हृदय रो
केंद्र रिसर्च सेंटर बनेगा : डॉ रूंग

नागरमल मोदी सेवा सदन सेवा भाव से स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने वाली संस्था : संजय सेठ

नागरमल मोदी सेवा सदन ने लगाया निःशुल्क चिकित्सा शिविर

The integration of pathology services with home collection is a testament to our dedication to patient centered care. By combining precision diagnostics with the convenience of home collections, we are not only advancing the field of pathology but also making significant strides towards a more inclusive and accessible healthcare system.

With the help of robust management team and administration in Seva Sadan Hospital, we strive to meet the needs of community and improve patients outcomes, one diagnosis at a time.

Dr. Nisha Maheshwari
Lab Head & Consultant Pathologist

NEW BORN CARE

Date of Admission : 23.11.2023 | Date of Discharge : 22.12.2023

Late Preterm, weight 1170 gm deliver by Emergency LSCS I/V/O M/H/O - chronic kidney disease +GB stone and sever pain. Baby delivered and CIAB - admitted in NICU I/V/O RDS (Respiratory Distress Syndrome), very low Birth weight (VLBW) and preterm care. Baby kept on high flow, course of baby is very up and down, needs oxygen for 10 day. at At Dol-7 baby deteriorated with sepsis workup came positive and Blood Culture showing klebsiella oxytoca. Weight of the baby went upto 980 gm. Gradually baby improved. Baby Diagnosed with congenital hypothyroidism too, for which medication started. Baby got discharged after one month of admission with weight 1260 gm on breast feeding and katori spoon feed (mother milk only) and Kangaroo mother care.

FEED BACK

My baby was admitted to NICU on 23/11/2023 after premature delivery. Today she is getting discharged. During his entire stay at NICU, the arrangements related to medical treatment was very good. The doctor was very supportive and has taken good care of my child. The Nursing Staffs were too very co-operative and supported well in the treatment of my child. I am satisfied with NICU arrangements and treatment given here. I wish the hospital with best wishes in serving the mankind.

Sumit Kumar, (6200227847) Date : 22/12/23

EMERGENCY

Date of Admission : 13.06.2024 | Date of Discharge : 21.06.2024

8 Yrs old male child weighing 18.8 kg came to Pediatric OPD (Dr. Avishek Agrawal). With History of fall from bicycle on 13.06.2024, leading to severe abdominal pain and pallor. Urgent USG abdomen done S/O - Moderate ascities (>1 litter) (Hemoperitoneum on diagnostic aspiration) I/V/O this child was admitted in PICU and urgent surgical call was made to Surgeon (Dr. Rajesh Maroo). Immediate consent was taken from family members and decision was taken for Exploratory Laparotomy. Operation done on same night and during surgery it was diagnosed with Jejunal perforation - for which resection & anastomosis done. Gradually the condition of child improved and baby went home walking & stable.

लक्ष्य

मरीज के प्रभावी उपचार को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य सुविधाओं को नैतिकता के साथ निरंतर उन्नत करते रहना जिससे यह अस्पताल राँची और आसपास के क्षेत्रों के मरीजों की पहली पसंद का अस्पताल हो।

उद्देश्य

कम खर्च - समुचित ईलाज - सही व्यवहार

मूल्य

अनुशासन, करूणा, नैतिकता और प्रतिबद्धता

हृदय विभाग

जब कोई हार्ट बिगड़ जाये, और कोई मुश्किल पड़ जाये
तुम आना सेवा सदन हार्ट सेंटर, तो बात बन जाये

इसे बनाने में है कोल-इंडिया का बड़ा हाथ,
फिर समाज ने सदन को दिया है अपना साथ

पुनीत-पवन ने किए हैं बड़े काज,
गोवर्धन-महेश-अजय रहे हैं सरताज।

चिकित्सीय चुनौतियाँ निभायेंगे डॉ. प्रत्यय गुहा सरकार,
साथ में होंगे, डॉ. आशुतोष, डॉ. विनय और डॉ. अनुपम

तुम रखना इन पर भरोसा तो,
बात बन जाए, जब कोई हार्ट .....

श्रीमती रेखा जैन
उपाध्यक्ष

श्रद्धांजलि

सेवा सदन परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि...

उमा शंकर साबू

धर्मचन्द जैन रारा

हरिकृष्ण बजाज

"**राम**" त्रेता युग से ही जनमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम के स्वरूप में रोम-रोम में रमे हैं। अध्योध्या में रामजन्म भूमि पर स्थापित मंदिर सदियों से सबों की आस्था का वक्ष-स्थल रहा है।

दुर्भाग्यवश 15वीं सदी में आततायियों द्वारा इस पवित्र स्थल को बर्बाद कर वहाँ एक मस्जिद बना दी गई। लंबे संघर्ष ओर अनेकों बलिदान के फलस्वरूप अंततः 9 नवम्बर 2022 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने रामजन्म भूमि मंदिर के पक्ष में फैसला दिया।

22 जनवरी 2024 को भगवान राम की जन्मभूमि स्थल पर भव्य मंदिर में रामलला की दिव्य प्राण प्रतिष्ठा की गई। अयोध्या में बना यह राम मंदिर भारत समेत विश्व में फैले समस्त हिन्दुओं के लिए आस्था का एक बड़ा केन्द्र है।

इस पावन दिवस पर सदन में जन्मे प्रत्येक शिशु की माता को रामचरित मानस की एक प्रति सम्मान पत्र सहित उपहार स्वरूप दी गई।

स्वागतम् - सदन परिवार में

महेश पोद्दार

प्रदीप कु. नारसरिया

कविता मित्तल

सुरेश साबू

प्रदीप कु. राजगढ़िया

पुनित कु. अग्रवाल

आलोक कु. अग्रवाल

वरूण जालान

रोहित अग्रवाल

विक्रम जैन

AC MARKET, GEL CHURCH COMPLEX, MAIN ROAD, RANCHI
(0651 2331500 / 9572377358)

For franchise inquiry, please call on 9158635000 or send email on franchisee@tbzoriginal.com

tbz®
The original since 1864